राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन एक : विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. डॉ. शिव प्रकाश, शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत, Email id -spvishwakarma81@gmail.com

2. दिव्या चौधरी, शोधार्थिनी, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन *"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"* का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System – IKS) को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पुनः एकीकृत करने की आवश्यकता, स्वरूप एवं प्रभाव का समग्र विश्लेषण करना है। वर्तमान वैश्विक एवं तकनीकी युग में जहाँ शिक्षा अधिकतर सूचना-केंद्रित होती जा रही है, वहीं नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं अनुभवात्मक अधिगम का ह्रास एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन को शिक्षा के समग्र विकास हेतु एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में प्रस्तुत किया है।

अध्ययन में कुल 280 प्रतिभागियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें 160 शिक्षक एवं 120 विद्यार्थी शामिल थे। शोध में मिश्रित विधि (Mixed Method) का उपयोग किया गया, जिसके अंतर्गत प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं दस्तावेज़ विश्लेषण के माध्यम से आँकड़े संकलित किए गए। यह दृष्टिकोण अध्ययन को अधिक व्यापक एवं विश्वसनीय बनाता है, क्योंकि इसमें मात्रात्मक (quantitative) एवं गुणात्मक (qualitative) दोनों प्रकार के डेटा का समन्वय किया गया है।

अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन शिक्षण प्रक्रिया को अधिक संदर्भित (contextual), मूल्य-आधारित (value-oriented) तथा अनुभवात्मक (experiential) बनाता है। IKS आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि होती है, साथ ही उनमें सांस्कृतिक पहचान, नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास होता है। इसके अतिरिक्त, सहभागिता एवं सक्रिय अधिगम में भी सकारात्मक परिवर्तन देखा गया, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक जीवंत एवं छात्र-केंद्रित बनती है।

हालाँकि, अध्ययन में यह भी पाया गया कि भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभावी पुनर्संयोजन में कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इनमें पाठ्यचर्या में समुचित एकीकरण की कमी, शिक्षकों के लिए आवश्यक प्रशिक्षण का अभाव, तथा उपयुक्त शिक्षण-संसाधनों एवं डिजिटल सामग्री की सीमित उपलब्धता प्रमुख हैं। ये बाधाएँ IKS के व्यापक एवं प्रभावी कार्यान्वयन में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

अंततः, यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशा-निर्देशों के अनुरूप भारतीय ज्ञान परंपरा का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक पुनर्संयोजन किया जाए, तो शिक्षा प्रणाली को अधिक समग्र (holistic), सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक, मूल्य-समृद्ध एवं बहुविषयी बनाया जा सकता है। यह न केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाता है, बल्कि उन्हें एक जागरूक, नैतिक एवं जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित करने में भी सहायक सिद्ध होता है।

कुंजी शब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परंपरा, पाठ्यचर्या पुनर्संयोजन, समग्र शिक्षा

परिचय

भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक आधार सदैव ज्ञान, मूल्य एवं जीवन-कौशल के समन्वित विकास पर आधारित रहा है। प्राचीन गुरुकुल परंपरा से लेकर आधुनिक शिक्षा व्यवस्था तक, भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System – IKS) ने व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास को समान महत्व दिया है। वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद, दर्शन एवं विभिन्न लोक-परंपराएँ न केवल ज्ञान के स्रोत रहे हैं, बल्कि जीवन-दृष्टि एवं आचरण के मार्गदर्शक भी रहे हैं।

वर्तमान वैश्वीकरण एवं तकनीकी युग में शिक्षा का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। शिक्षा अब केवल सूचना के संचरण तक सीमित न रहकर कौशल, नवाचार एवं प्रतिस्पर्धात्मकता पर केंद्रित होती जा रही है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में एक ओर जहाँ आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को अधिक सुलभ एवं प्रभावी बनाया है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं नैतिक शिक्षा की उपेक्षा भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों में मूल्य-बोध, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सांस्कृतिक पहचान के स्तर पर असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

इसी संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभरकर सामने आती है, जो शिक्षा को समग्र (holistic), बहुविषयी (multidisciplinary) एवं अनुभवात्मक (experiential) बनाने पर बल देती है। इस नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन को शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन का एक प्रमुख आधार माना गया है। NEP 2020 यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करती है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न होकर व्यक्ति के चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक संवर्धन एवं सामाजिक विकास का भी सशक्त साधन होना चाहिए।

भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं है, बल्कि यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ पारंपरिक ज्ञान एवं मूल्यों का समन्वित एकीकरण है। यह प्रक्रिया शिक्षा को अधिक संदर्भित, जीवनोपयोगी एवं सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक बनाती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में न केवल शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होता है, बल्कि उनमें नैतिकता, सह-अस्तित्व, संवेदनशीलता एवं जिम्मेदारी जैसे गुणों का भी विकास होता है।

हालाँकि, NEP 2020 के प्रावधानों के बावजूद भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभावी पुनर्संयोजन में अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं, जैसे- पाठ्यचर्या में उपयुक्त समावेशन का अभाव, शिक्षकों के प्रशिक्षण की कमी, तथा आवश्यक शिक्षण-संसाधनों की उपलब्धता में सीमाएँ। इन चुनौतियों के कारण IKS का समुचित क्रियान्वयन अभी भी सीमित स्तर पर ही संभव हो पा रहा है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन की प्रकृति, आवश्यकता एवं प्रभाव का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार IKS आधारित शिक्षा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, सांस्कृतिक जागरूकता, मूल्य-बोध एवं सहभागिता को प्रभावित करती है, तथा यह शिक्षा प्रणाली को अधिक समग्र एवं प्रभावी बनाने में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकती है।

अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System – IKS) एवं आधुनिक शिक्षण सिद्धांतों के समन्वित दृष्टिकोण पर आधारित है, जो यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया न होकर व्यक्ति के समग्र विकास का माध्यम है। यह सैद्धांतिक पृष्ठभूमि विभिन्न पारंपरिक एवं आधुनिक सिद्धांतों के एकीकरण के माध्यम से IKS के पुनर्संयोजन की आवश्यकता एवं प्रभाव को समझने का आधार प्रदान करती है।

प्रथम, भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का सैद्धांतिक आधार वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद एवं भारतीय दर्शन में निहित है, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह नैतिकता, आत्मानुशासन, सह-अस्तित्व एवं आध्यात्मिक उन्नति को भी समान महत्व देता है। IKS के अनुसार शिक्षा व्यक्ति के "Head, Heart and Hand" अर्थात् बौद्धिक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों के संतुलित विकास पर आधारित होती है, जो समग्र शिक्षा (Holistic Education) की अवधारणा को सुदृढ़ करता है।

द्वितीय, निर्माणवाद सिद्धांत (Constructivism), जिसे Jean Piaget एवं Lev Vygotsky द्वारा प्रतिपादित किया गया, यह मानता है कि अधिगम एक सक्रिय एवं अनुभव-आधारित प्रक्रिया है, जिसमें विद्यार्थी अपने अनुभवों एवं सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से ज्ञान का निर्माण करते हैं। यह सिद्धांत IKS के अनुभवात्मक एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण दृष्टिकोण के साथ सामंजस्य स्थापित करता है।

तृतीय, अनुभवात्मक अधिगम सिद्धांत (Experiential Learning Theory), जिसे David Kolb ने विकसित किया, 'करके सीखना' (Learning by Doing) पर बल देता है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि वास्तविक अनुभवों, गतिविधियों एवं चिंतन के माध्यम से प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी एवं प्रभावी होता है। IKS आधारित शिक्षण में भी गतिविधि, अनुभव एवं चिंतन को प्रमुख स्थान दिया जाता है, जिससे यह सिद्धांत अध्ययन के लिए अत्यंत प्रासंगिक बनता है।

चतुर्थ, समग्र शिक्षा सिद्धांत (Holistic Education Theory) यह प्रतिपादित करता है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास का संतुलन स्थापित करना है। यह सिद्धांत IKS के मूलभूत दर्शन के अनुरूप है, जहाँ शिक्षा को जीवनोपयोगी, मूल्यपरक एवं सामाजिक रूप से प्रासंगिक बनाने पर बल दिया जाता है।

अंततः, इन सभी सिद्धांतों का समन्वय यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन केवल सांस्कृतिक पुनरुद्धार नहीं है, बल्कि यह एक वैज्ञानिक एवं शैक्षणिक दृष्टिकोण है, जो आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी, संदर्भित एवं समग्र बना सकता है। इस सैद्धांतिक आधार के माध्यम से यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि NEP 2020 के अनुरूप IKS का समावेशन विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के पुनर्संयोजन की आवश्यकता एवं उपयोगिता को स्पष्ट करता है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली तीव्र गति से आधुनिक एवं तकनीक-आधारित होती जा रही है, किन्तु इसमें नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं जीवनोपयोगी ज्ञान के समुचित समावेश का अभाव देखा जाता है। यह अध्ययन इस कमी को दूर करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो पारंपरिक ज्ञान एवं आधुनिक शिक्षा के मध्य संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

शैक्षणिक दृष्टि से यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेशन से शिक्षण प्रक्रिया अधिक संदर्भित, अनुभवात्मक एवं मूल्य-आधारित बनती है। इससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होता है तथा उनमें समग्र विकास अर्थात् बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास को प्रोत्साहन मिलता है। यह अध्ययन शिक्षकों को भी यह दिशा प्रदान करता है कि वे किस प्रकार पारंपरिक ज्ञान एवं आधुनिक शिक्षण विधियों का समन्वय कर प्रभावी शिक्षण वातावरण तैयार कर सकते हैं।

नीतिगत दृष्टिकोण से यह अध्ययन विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसके निष्कर्ष NEP 2020 के उद्देश्यों जैसे समग्र शिक्षा, बहुविषयी दृष्टिकोण एवं सांस्कृतिक पुनर्संयोजन को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। यह अध्ययन पाठ्यक्रम निर्माताओं, नीति-निर्माताओं

एवं शैक्षिक संस्थानों को यह मार्गदर्शन प्रदान करता है कि IKS को शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार व्यावहारिक एवं व्यवस्थित रूप से एकीकृत किया जा सकता है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विद्यार्थियों में सांस्कृतिक पहचान, मूल्य-बोध एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को सुदृढ़ करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश से विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़ते हैं तथा एक जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होते हैं।

अंततः, यह अध्ययन भविष्य के अनुसंधान के लिए भी एक आधार प्रस्तुत करता है, जिससे IKS के विभिन्न आयामों जैसे योग, आयुर्वेद, दर्शन, नैतिक शिक्षा आदि के प्रभाव का गहन अध्ययन किया जा सकता है। इस प्रकार, यह शोध शिक्षा के क्षेत्र में एक समग्र, संतुलित एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध दृष्टिकोण प्रदान करता है।

समस्या का विवरण

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा का सीमित उपयोग होता है। NEP 2020 के बावजूद इसके प्रभावी पुनर्संयोजन में अनेक व्यावहारिक चुनौतियाँ हैं।

प्रमुख शब्दों की प्रकार्यात्मक परिभाषा

- **भारतीय ज्ञान परंपरा)IKS):** पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणाली
- **पुनर्संयोजन:** आधुनिक शिक्षा में पुनः एकीकरण
- **NEP 2020:** भारत की नई शिक्षा नीति

चर

- **स्वतंत्र चर-** भारतीय ज्ञान परंपरा का पाठ्यचर्या में समावेशन
- **आश्रित चर-** शैक्षिक उपलब्धि, सांस्कृतिक जागरूकता, मूल्य बोध, सहभागिता

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रस्तुत अध्ययन का प्रथम उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा)IKS) की भूमिका का अध्ययन करना है।
2. द्वितीय उद्देश्य शिक्षण प्रक्रिया पर भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभाव का विश्लेषण करना है।
3. तृतीय उद्देश्य विद्यार्थियों के समग्र विकास पर भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रभाव का अध्ययन करना है।

शोध प्रश्न

- क्या IKS का समावेशन शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाता है?
- क्या यह सांस्कृतिक पहचान को सुदृढ़ करता है?

समस्या का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर तक सीमित है, जहाँ विद्यार्थियों के शैक्षिक, नैतिक एवं सामाजिक विकास पर भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन के प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

सीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन 280 प्रतिभागियों तक सीमित है, अतः इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण व्यापक जनसंख्या पर सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, अध्ययन की अवधि चार माह तक सीमित रखी गई है, जो दीर्घकालिक प्रभावों के पूर्ण आकलन के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती।

साहित्य समीक्षा

1. महात्मा गांधी (1958)- महात्मा गांधी ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास का आधार माना। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सत्य, अहिंसा, आत्मानुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास करना होना चाहिए। उन्होंने 'नैतिक एवं मूल्य-आधारित शिक्षा' पर विशेष बल दिया, जिससे व्यक्ति एक जिम्मेदार एवं संवेदनशील नागरिक बन सके। यह दृष्टिकोण वर्तमान अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन में मूल्य-आधारित शिक्षा का समावेश अत्यंत आवश्यक है।

2. रवीन्द्रनाथ टैगोर (1917)- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने समग्र शिक्षा (Holistic Education) की अवधारणा का समर्थन करते हुए शिक्षा को बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास का माध्यम माना। उन्होंने शिक्षा को प्रकृति, कला एवं संस्कृति से जोड़ने पर बल दिया, जिससे विद्यार्थी का व्यक्तित्व बहुआयामी रूप से विकसित हो सके। टैगोर का यह दृष्टिकोण भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल सिद्धांतों के अनुरूप है और यह अध्ययन को यह आधार प्रदान करता है कि IKS का समावेश शिक्षा को अधिक संतुलित एवं जीवनोपयोगी बना सकता है।

3. NCERT (2021)- NCERT (2021) द्वारा प्रस्तुत रूपरेखा में भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित शिक्षा को अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक माना गया है। इसमें यह बताया गया है कि IKS के समावेश से शिक्षा अधिक संदर्भित, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध एवं मूल्यपरक बनती है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष का समर्थन करता है कि NEP 2020 के अंतर्गत IKS का समावेश शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

4. Sharma (2022)- Sharma (2022) के अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव का विश्लेषण किया गया, जिसमें यह पाया गया कि NEP 2020 शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयी एवं छात्र-केंद्रित बनाने की दिशा में एक प्रभावी कदम है। इस नीति के अंतर्गत पारंपरिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक एवं कौशल-आधारित शिक्षा के समन्वय पर विशेष बल दिया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि NEP 2020 के प्रावधान भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुणात्मक सुधार लाने में सहायक हैं, जो वर्तमान शोध के उद्देश्य के अनुरूप है।

5. Kumar (2023)- Kumar (2023) ने बहुविषयी (Multidisciplinary) शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि विभिन्न विषयों के एकीकृत अध्ययन से विद्यार्थियों की समझ, रचनात्मकता एवं समस्या-समाधान क्षमता में वृद्धि होती है। बहुविषयी दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक व्यापक एवं व्यावहारिक बनाता है। यह अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, क्योंकि IKS स्वयं एक बहुविषयी प्रणाली है, जो विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों के समन्वय को प्रोत्साहित करती है।

शोध अंतराल

उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS), मूल्य-आधारित शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर पृथक-पृथक रूप से पर्याप्त अध्ययन किए गए हैं। महात्मा गांधी एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे चिंतकों ने मूल्य-आधारित एवं समग्र शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया है, वहीं समकालीन अध्ययनों में NEP 2020 के प्रभाव एवं बहुविषयी शिक्षा की उपयोगिता को भी प्रमाणित किया गया है। NCERT द्वारा भी IKS आधारित शिक्षा को प्रासंगिक एवं उपयोगी माना गया है।

किन्तु, इन सभी दृष्टिकोणों के समेकित एवं अनुभवजन्य (empirical) अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित पाए जाते हैं, विशेषतः उच्च माध्यमिक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन के व्यावहारिक प्रभावों पर पर्याप्त शोध उपलब्ध नहीं है। यह भी स्पष्ट नहीं है कि NEP 2020 के अंतर्गत IKS का वास्तविक कक्षा-स्तरीय क्रियान्वयन किस हद तक प्रभावी है तथा यह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, सांस्कृतिक जागरूकता, मूल्य-बोध एवं सहभागिता को किस प्रकार प्रभावित करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है, जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्संयोजन के प्रभाव का विश्लेषणात्मक एवं अनुभवजन्य अध्ययन किया गया है। यह शोध न केवल सैद्धांतिक स्तर पर IKS एवं NEP 2020 के बीच संबंध को स्पष्ट करता है, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर इसके प्रभाव एवं चुनौतियों को भी उजागर करता है, जिससे शिक्षा प्रणाली को अधिक समग्र एवं प्रभावी बनाने की दिशा में ठोस आधार प्राप्त होता है।

शोध पद्धति

- **शोध डिज़ाइन**- प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित विधि (Mixed Method) शोध डिज़ाइन का उपयोग किया गया है, जिसमें मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के आँकड़ों का समन्वित विश्लेषण किया गया है, जिससे अध्ययन अधिक व्यापक एवं विश्वसनीय बनता है।
- **जनसंख्या**- अध्ययन की जनसंख्या में शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों को शामिल किया गया है, ताकि विषय के विभिन्न दृष्टिकोणों को समग्र रूप से समझा जा सके।
- **न्यादर्श (Sample)**- इस अध्ययन के लिए कुल 280 प्रतिभागियों का चयन किया गया, जो शोध के उद्देश्यों के अनुरूप उपयुक्त प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं।
- **न्यादर्श विधि (Sampling Method)**- प्रतिभागियों के चयन हेतु यादृच्छिक (Random Sampling) विधि का प्रयोग किया गया, जिससे प्रत्येक सदस्य को समान अवसर प्राप्त हुआ और चयन में पक्षपात की संभावना न्यूनतम रही।
- **आँकड़ों का स्रोत**- अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है, जिससे निष्कर्ष अधिक सुदृढ़ एवं प्रमाणिक बने।
- **शोध उपकरण (Research Tools)**- आँकड़ों के संकलन हेतु प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा दस्तावेज़ विश्लेषण जैसे विभिन्न शोध उपकरणों का उपयोग किया गया, जिससे विषय की गहन एवं बहुआयामी समझ प्राप्त हुई।
- **आँकड़ों का संग्रह (Data Collection)**- आँकड़ों का संग्रह फील्ड सर्वे एवं साक्षात्कार के माध्यम से किया गया, जिससे प्रतिभागियों के वास्तविक अनुभवों एवं दृष्टिकोणों को संकलित किया जा सका।
- **सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis)**- संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण Mean (माध्य), Percentage (प्रतिशत) तथा t-test (टी-परीक्षण) जैसी सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से किया गया, जिससे प्राप्त परिणामों की सार्थकता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित की जा सके।

सारणीकरण और व्याख्या

सारणी 1: शैक्षिक उपलब्धि

समूह	माध्य	SD
पारंपरिक	65	5.2
IKS आधारित	84	6.0

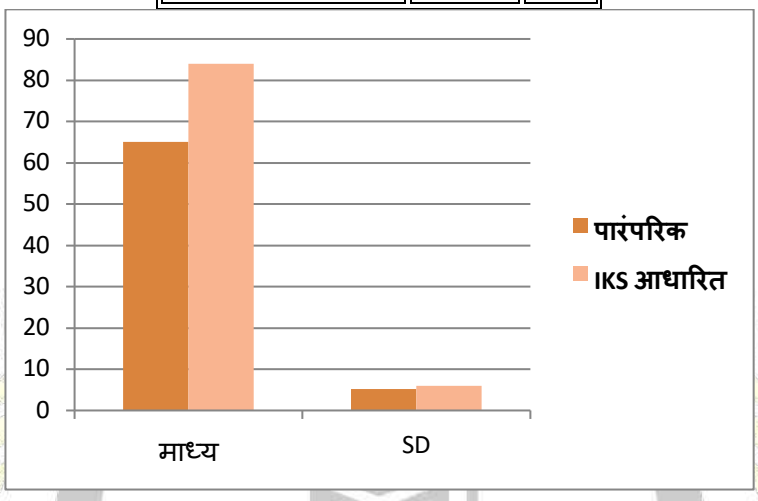

व्याख्या:

सारणी 1 में पारंपरिक शिक्षण एवं IKS (भारतीय ज्ञान परंपरा) आधारित शिक्षण के अंतर्गत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के माध्य (Mean) एवं मानक विचलन (SD) को दर्शाया गया है। पारंपरिक समूह का माध्य 65 तथा SD 5.2 पाया गया, जो यह संकेत करता है कि पारंपरिक शिक्षण पद्धति में विद्यार्थियों की उपलब्धि मध्यम स्तर की है तथा उनके प्रदर्शन में अपेक्षाकृत कम विविधता पाई जाती है।

इसके विपरीत, IKS आधारित समूह का माध्य 84 तथा SD 6.0 पाया गया, जो पारंपरिक समूह की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक है। यह अंतर (लगभग 19 अंकों का) यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाता है। यद्यपि इस समूह में मानक विचलन थोड़ा अधिक है, फिर भी यह संकेत करता है कि अधिकांश विद्यार्थियों में सुधार हुआ है, भले ही सुधार का स्तर भिन्न-भिन्न रहा हो।

यह परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि IKS आधारित शिक्षण पद्धति, जो अनुभवात्मक, मूल्य-आधारित एवं संदर्भित अधिगम पर बल देती है, विद्यार्थियों की समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता एवं ज्ञान के अनुप्रयोग को सुदृढ़ करती है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है और शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण वृद्धि करता है।

सारणी 2: सांस्कृतिक जागरूकता

समूह	स्कोर
पारंपरिक	3.5
IKS आधारित	4.6

व्याख्या:

सारणी 2 में पारंपरिक शिक्षण एवं IKS (भारतीय ज्ञान परंपरा) आधारित शिक्षण के अंतर्गत विद्यार्थियों की सांस्कृतिक जागरूकता के स्कोर को प्रस्तुत किया गया है। पारंपरिक समूह का स्कोर 3.5 पाया गया, जो यह दर्शाता है कि इस समूह में विद्यार्थियों की सांस्कृतिक समझ, परंपराओं के प्रति जागरूकता एवं मूल्य-बोध का स्तर मध्यम है।

इसके विपरीत, IKS आधारित समूह का स्कोर 4.6 पाया गया, जो उल्लेखनीय रूप से अधिक है। यह अंतर स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षण विद्यार्थियों में सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं के प्रति सम्मान एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूकता को सुदृढ़ करता है। IKS आधारित शिक्षण में सांस्कृतिक संदर्भ, लोक-परंपराएँ, नैतिक मूल्य एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण का समावेश होने के कारण विद्यार्थियों का जुड़ाव अपनी सांस्कृतिक विरासत से अधिक गहरा होता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि IKS आधारित शिक्षण पद्धति सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाने में अत्यंत प्रभावी है और यह विद्यार्थियों में सांस्कृतिक पहचान एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सारणी 3: पूर्वपश्च तुलना-

संकेतक	पूर्व	पश्च
सहभागिता	3.2	4.5
मूल्य बोध	3.1	4.7

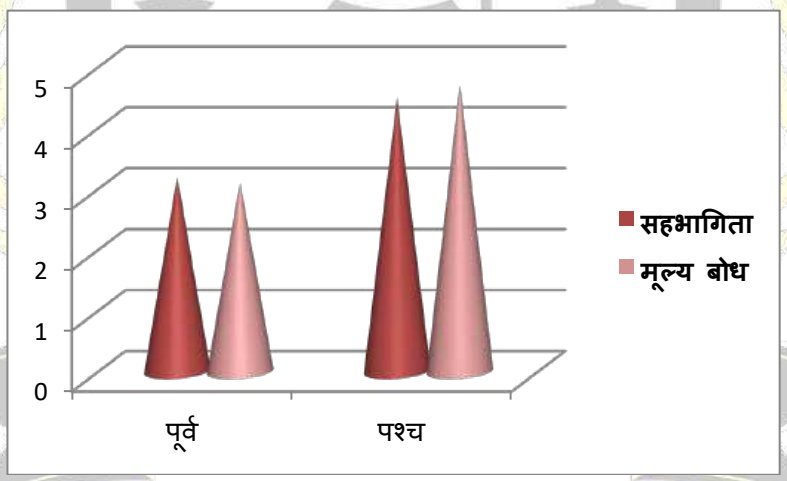

व्याख्या:

सारणी 3 में सहभागिता एवं मूल्य बोध के पूर्व (Pre) तथा पश्च (Post) स्कोर का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सहभागिता के संदर्भ में पूर्व स्कोर 3.2 था, जो पश्च में बढ़कर 4.5 हो गया। यह वृद्धि दर्शाती है कि IKS आधारित शिक्षण के प्रभाव से विद्यार्थियों की कक्षा में सक्रिय भागीदारी, रुचि एवं सीखने की प्रेरणा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। अनुभवात्मक गतिविधियाँ, सांस्कृतिक संदर्भ एवं संवादात्मक शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों को अधिक संलग्न बनाती हैं।

इसी प्रकार, मूल्य बोध के क्षेत्र में पूर्व स्कोर 3.1 से बढ़कर पश्च स्कोर 4.7 हो गया, जो अत्यंत महत्वपूर्ण वृद्धि को दर्शाता है। यह स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के समावेश से विद्यार्थियों में नैतिकता, सह-अस्तित्व, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का सशक्त विकास हुआ है।

समग्र रूप से, दोनों संकेतकों में स्पष्ट एवं उल्लेखनीय वृद्धि यह सिद्ध करती है कि IKS आधारित शिक्षण न केवल शैक्षिक बल्कि व्यवहारिक एवं नैतिक विकास में भी अत्यंत प्रभावी है। यह शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों को अधिक सक्रिय, जागरूक एवं मूल्य-संपन्न बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

परिकल्पना परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पना की जाँच हेतु *t- परीक्षण* का उपयोग किया गया, जिसमें प्राप्त t-value = 5.80 तथा $p < 0.05$ पाया गया। यह परिणाम सांख्यिकीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। सामान्यतः $p < 0.05$ का अर्थ है कि प्राप्त अंतर संयोगवश नहीं है, बल्कि अध्ययन में किए गए हस्तक्षेप का वास्तविक प्रभाव दर्शाता है।

यहाँ t-value का 5.80 होना इस बात का संकेत है कि पारंपरिक एवं IKS आधारित शिक्षण समूहों के बीच स्पष्ट एवं सार्थक अंतर विद्यमान है। चूँकि यह मान निर्धारित स्तर से अधिक है, अतः शून्य परिकल्पना (H_0) जिसमें यह माना गया था कि IKS का कोई प्रभाव नहीं है को अस्वीकृत किया जाता है। इसके विपरीत, वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) को स्वीकार किया जाता है, जो यह प्रतिपादित करती है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेशन शिक्षण प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि IKS आधारित शिक्षण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, सांस्कृतिक जागरूकता, मूल्य बोध एवं सहभागिता में सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सुधार करता है। यह परिणाम इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन शिक्षा को अधिक प्रभावी, समग्र एवं मूल्य-आधारित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि- अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) आधारित शिक्षण के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। IKS आधारित दृष्टिकोण, जो अनुभवात्मक, संदर्भित एवं जीवनोपयोगी अधिगम पर बल देता है, विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता तथा ज्ञान के अनुप्रयोग को सुदृढ़ करता है। इससे अधिगम अधिक प्रभावी एवं स्थायी बनता है।

2. सांस्कृतिक जागरूकता में वृद्धि- अध्ययन के निष्कर्षों से यह भी ज्ञात हुआ कि IKS के समावेशन से विद्यार्थियों की सांस्कृतिक जागरूकता में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। भारतीय परंपराओं, लोक-ज्ञान एवं सांस्कृतिक मूल्यों के समावेश से विद्यार्थियों में अपनी विरासत के प्रति सम्मान, पहचान एवं जुड़ाव की भावना विकसित हुई, जिससे वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति अधिक सजग बने।

3. मूल्य बोध में सुधार- IKS आधारित शिक्षण ने विद्यार्थियों के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सत्य, अहिंसा, सह-अस्तित्व, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का समावेश शिक्षण प्रक्रिया में होने से विद्यार्थियों के व्यवहार एवं दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया। इससे उनका व्यक्तित्व अधिक संतुलित एवं मूल्य-संपन्न बना।

4. सहभागिता में वृद्धि- अध्ययन में यह भी पाया गया कि IKS आधारित शिक्षण के कारण विद्यार्थियों की कक्षा में सहभागिता एवं सक्रिय भागीदारी में वृद्धि हुई है। अनुभवात्मक गतिविधियाँ, संवादात्मक शिक्षण एवं सांस्कृतिक संदर्भों का उपयोग विद्यार्थियों को अधिक रुचिपूर्ण एवं संलग्न बनाता है, जिससे वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

अनुशंसाएँ

- **पाठ्यचर्या में IKS का समावेश**- शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) को पाठ्यचर्या के विभिन्न स्तरों पर व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ढंग से शामिल किया जाना चाहिए। विषय-वस्तु में भारतीय दर्शन, लोक-ज्ञान, नैतिक मूल्य, योग, आयुर्वेद एवं सांस्कृतिक तत्वों का एकीकृत समावेश शिक्षण को अधिक संदर्भित, जीवनोपयोगी एवं मूल्य-आधारित बनाएगा। इससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ उनकी सांस्कृतिक पहचान एवं सामाजिक चेतना का भी विकास होगा।
- **शिक्षक प्रशिक्षण**- IKS आधारित शिक्षण को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए शिक्षकों का विशेष प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण विधियों के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों एवं उनके व्यावहारिक अनुप्रयोग की जानकारी दी जानी चाहिए। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों की दक्षता, संवेदनशीलता एवं नवाचारी दृष्टिकोण को विकसित किया जा सकता है, जिससे वे कक्षा में मूल्य-आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण को सफलतापूर्वक लागू कर सकें।
- **डिजिटल सामग्री का विकास**- वर्तमान डिजिटल युग को ध्यान में रखते हुए IKS आधारित शिक्षण सामग्री को डिजिटल रूप में विकसित किया जाना चाहिए। ई-कंटेंट, वीडियो लेक्चर, इंटरैक्टिव मॉड्यूल, केस-स्टडी एवं मल्टीमीडिया संसाधनों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जा सकता है। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक आकर्षक, सुलभ एवं प्रभावी बनेगी तथा विद्यार्थियों में सीखने के प्रति रुचि एवं सहभागिता में वृद्धि होगी।

संदर्भ

- महात्मा गांधी। (1958). *गांधी वाङ्मय* (खंड 8). नई दिल्ली: पब्लिकेशन्स डिवीजन।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर। (1917). *शिक्षा संबंधी निबंध*। लंदन: मैकमिलन।
- NCERT। (2021). *भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) रूपरेखा*। नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- शर्मा, आर. (2022). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय शिक्षा पर उसका प्रभाव*। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़*, 10(2), 45–52।
- कुमार, एस. (2023). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में बहुविषयक शिक्षा*। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, 12(1), 30–38।